

रवाना वि. (फा.) 1. जो कहीं से चल पड़ा हो 2. भेजा हुआ।

रवानी स्त्री. (फा.) 1. प्रवाह, अबाध गति 2. बोलते समय बीच में न अटकना।

रवायत स्त्री. (अर.) 1. लोकोक्ति, कहावत 2. जनश्रुति।

रवाहीन वि. (देश.+तद्.) जो केलासीय या रवेदार न हो, अक्रिस्टलीय।

रवि पुं. (तत्.) 1. आदित्य, सूर्य 2. आक, मदार का पौधा 3. पर्वत ज्यो. हस्त नक्षत्र 4. बारह की संख्या।

रवि-उच्च पुं. (तत्.) (खगोल.) किसी ग्रह अथवा धूमकेतु की कक्षा का वह बिंदु जो सूर्य के केंद्र से अधिकतम दूरी पर होता है (पृथ्वी प्रति वर्ष पहली जुलाई के आसपास इस बिंदु पर पहुँचती है पर्या. सूर्योच्च, अपसौर विलो. रविनीच।

रविकर पुं. (तत्.) सूर्य-किरण, सूर्य की रश्मि।

रविकुल पुं. (तत्.) एक प्राचीन प्रतापी क्षत्रिय वंश जिसमें रघु, दशरथ, राम आदि राजा हुए। सूर्यवंश, भानुवंश।

रविजा स्त्री. (तत्.) सूर्य की पुत्री, यमुना नदी।

रविजात वि. (तत्.) सूर्य से उत्पन्न, पुं. रविपुत्र।

रवितनय पुं. (तत्.) 1. सूर्यपुत्र 2. शनिग्रह, 3. यमराज 4. अश्विनी कुमार 5. कर्ण।

रवितनया स्त्री. (तत्.) सूर्य की पुत्री, रविनंदिनी, रवितनुजा 2. यमुना नदी।

रविनंदन पुं. (तत्.) 1. सूर्यपुत्र 2. यम, शनि 3. अश्विनी कुमार 4. सुग्रीव 5. कर्ण।

रविमंडल पुं. (तत्.) 1. सूर्य के चतुर्दिक् चक्र के आकार का लाल घेरा, सूर्य के चारों तरफ वृत्ताकार विस्तार 2. सूर्य का बिंदु।

रविबाण पुं. (तत्.) 1. सूर्य का बाण 2. वह बाण जिसके चलाने पर सूर्य का सा प्रकाश पैदा होता था।

रविवार पुं. (तत्.) सूर्य का दिन, आदित्यवार, इतवार, रविवासर, सप्ताह का पहला दिन।

रविश स्त्री. (फा.) 1. चाल, गति 2. रंगदंग 3. पद्धति 4. रीति-रिवाज, रस्म, चलन, प्रचलन 5. खेत में क्यारियों के बीच चलने के लिए बनाया गया संकरा मार्ग।

रवि-संक्रांति स्त्री. (तत्.) सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करने का दिन, समय, सूर्य द्वारा राशि संक्रमण।

रवि-सारथि पुं. (तत्.) सूर्य का साराथि जो अरुण के नाम से जाना जाता है।

रविसूनू पुं. (तत्.) 1. रविसुवन, सूर्य पुत्र, रवितनय 2. शनि और यमराज सूर्य पुत्र माने जाते हैं।

रवीला वि. (तत्.) जिसमें कण या रवे हों, रवेदार।

रवेदार वि. (तद्.+फा.) रवे वाला, जो रवों के रूप में हो।

रवैया पुं. (फा.) 1. चालचलन, व्यवहार, तौर-तरीका, पद्धति, ढंग 2. प्रथा, रंगदंग।

रशना स्त्री. (तत्.) 1. जीभ (रसना) जिह्वा रस्सी, डोरी 2. लगाम, रास 3. कमर में बाँधने की करधनी।

रशनोपमा स्त्री. (तत्.) काव्य. उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमाओं की ऐसी शृंखला रहती है कि प्रत्येक उपमेय अगली उपमा में उपमान बन जाता है उदा. "मति सी नति, नति सी बिनति, बिनती सी रति चाह"।

रश्क पुं. (फा.) 1. ईर्ष्या, विद्वेष, किसी को नुकसान किए बिना उसके समान बनने की भावना 2. इसके विपरीत हसद में जो इसका समानार्थी है दूसरे को हानि पहुँचा कर भी अपनी ईर्ष्या की तुष्टि का भाव रहता है।

रश्मिकक्ष पुं. (तत्.) वास्तु. सौर चिकित्सा गृह, जहाँ सूर्य की किरणों से रोगोपचार किया जाता है।